International Journal For Technological Research in Engineering
Volume 12 Issue 7 March-2025 ISSN (online) 2347-4718

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का विश्लेषण

सरिता यादव, डॉ. संध्या शर्मा
शोधार्थी, सहायक आचार्य
शिक्षा संकाय ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
JVR-2220 Enroll Number-JVR-1/22/10019

प्रस्तावना :

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययरनत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन है। अध्ययन में लिंग के आधार पर उद्देश्यों का निर्माण कर अध्ययन किया गया है। अध्ययन की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए अनुसंधानकर्ती ने अध्ययन प्रक्रिया को अनुसंधान विधि से सम्पन्न किया है। प्रस्तुत शोध में जयपुर जनपद में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को माना गया है।

अध्ययन में न्यादर्श के चुनाव हेतु यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् 300 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। जिसका निर्माण हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों वर्जन का उद्देश्य स्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मापन करना है। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों के विश्लेषणोपरान्त पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कुल विद्यार्थियों एवं छात्रों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव पाया गया। जबकि छात्राओं के सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव नहीं पाया गया। जिसका कारण आज भी बालिकाओं को परिवार, विद्यालय, समाज एवं अन्य

जगहों पर रोका–टोका जाता है। उन्हें बहुत कम अभिप्रेरित किया जाता है। उन्हें आगे बढ़ाने में लोगों की सोच आज भी पीछे है।

शब्द बीज : उच्च माध्यमिक स्तर, सृजनात्मकता, संस्थागत वातावरण, बालक–बालिकाओं, अभिप्रेरित।

उसी बालक को प्रतिभाशाली कहा जाता है जिसमें उच्च बौद्धिक क्षमता के साथ–साथ सृजनात्मक योग्यता होती है। जो विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन करते हैं। प्रतिभाशाली छात्रों का चयन करते समय बौद्धिक क्षमता के साथ–साथ सृजनात्मकता योग्यता पर ध्यान दिया जाता है। स्कूलों पर बहुत बड़ा ोष लगाया जाता है, उनके द्वारा चिन्तन को कम किया जा रहा है।

शिक्षक चाहते है कि विद्यार्थी परम्परावादी व रूढ़िवादी ही रहें। वे छात्रों द्वारा समस्याओं के हल को पसन्द नहीं करते है। छात्रों को स्वयं अपने मौलिक विचार प्रस्तुत करने के अवसर नहीं किए जाते हैं। उन्हें पुराने मार्ग पर चलने के लिए बाध्य करते हैं। कुछ छात्र नवीन ढंग से सोचते है, समस्या का समाधान करते हैं, अपनी पुस्तकों के विचारों की आलोचना करते हैं।

तार्किक प्रश्न पूछते है तो शिक्षक द्वारा उनकी आलोचना की जाती है। अतः बच्चे सिद्धान्तवादी विचार करने के लिए बाध्य है। प्रतियोगिताओं में केवल भाषा को ही प्राथमिकता दी जाती है। सृजनात्मकता शक्तियाँ दमित हो रही हे। सब को विचाराधारा में परिवर्तन करने की आवश्यकता है।

माध्यमिक शिक्षा का संचालन करने वाली संस्थाओं के संस्थागत वातावरण का ज्ञान आवश्यक है। संस्थागत वातावरण को संस्थागत पर्यावरण का एक अंग समझा जाता है। संस्थागत वातावरण विशिष्ट आयाम की रचना करता है। जो भौतिक

पर्यावरण से भिन्न होता है। भौतिक पर्यावरण में आशय विद्यालय की भौतिक वस्तुओं आदि से है। संस्थागत वातावरण विद्यालय की एक संस्कृति होती है। उसके व्यक्तिगत को रेखांकित करती है।

संस्थागत वातावरण शान्त, कठोर, उदासीन, बन्द, खुला हो सकता है। संस्था का वातावरण लोगों को आकर्षित करने वाली होना चाहिए। प्राथमिक विद्यालयों में ऐसा में वातावरण एक चुनौती है। प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों का सैकड़ों की संख्या में नामांकन हुआ है। संस्था के सदस्यों की उदासीनता वातावरण को प्रभावित करती है।

विद्यालय का वातावरण शिक्षण की नैतिक कार्य, सन्तुष्टि प्रभावशीलता, नेतृत्व की गुणात्मकता, कार्य क्षमता और उपलब्धि से सम्बन्धित है। प्रत्येक देश में अलग संस्कृतियाँ है उसी प्रकार प्रत्येक संगठन की अलग संस्कृति होती है। संस्था में सहयोग व स्नेह भावना से सदस्यों का आपसी जुड़ाव होना चाहिए। यह संस्था के वातावरण में महत्वपूर्ण कारक है। वातावरण का प्रभाव शिक्षकों की कार्यक्षमता, एवं उद्देश्यों को प्रभावित करती है।

विद्यालयों का संस्थागत वातावरण शिक्षक के साथ–साथ बालकों के व्यक्तित्व को भी प्रभावित करता है। यह तथ्य प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने वाली संस्थाओं में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। चूंकि बालक का व्यक्तित्व व मन बहुत ही संवेदनशील होते है। विद्यालयी वातावरण से तेजी से प्रभावित होते है। उनके विकास के लिए बेहतर विद्यालयी वातावरण प्रदान करना आवश्यक है। साक्षरता को ही शिक्षा नहीं कहा जा सकता है शिक्षा एक व्यापक जीवन है। महात्मा गांधी ने कहा है कि ***''साक्षारता को शिक्षा का अन्त नहीं कहा जा सकता और न ही प्रारम्भ कहा जा सकता है।***'

शिक्षा का अर्थ सम्पूर्ण विकास से है। इसलिए विद्यालयी वातावरण को उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। संस्थागत वातावरण किसी भी संगठन का एक अत्यन्त

महत्वपूर्ण एवं सार्थक पक्ष होता है। किसी भी संगठन की सफलता काफी सीमा तक उसके पर्यावरण पर निर्भर है। संस्थागत वातावरण ही संगठन में कालान्तर में उद्देश्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। प्राथमिक विद्यालयों के उद्देश्य दीर्घकालिक है इसलिए उनके वातावरण का ज्ञान महत्वपूर्ण है।

जिससे उनमें सुधार किये जा सके। इन दीर्घकालिक उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके। इस संस्थागत वातावरण को सामाजिक वातावरण और मानवीय वातावरण कहते हैं। मानवीय एवं सामाजिक वातावरण से अभिप्राय संगठन में कार्यरत अन्तः क्रिया के परिणाम के फलस्वरूप बने माहौल से होता है। जिसके परिणामस्वरूप संगठन में एक प्रकार का सामाजिक वातावरण उत्पन्न हो जाता है। वातावरण व्यक्तियों की परस्पर अन्तःक्रिया का परिणाम होता है इसलिए इसे मानवीय वातावरण कहते हैं।

माध्यमिक विद्यालयों के वातावरण को शैक्षिक दृष्टि से प्रभावशाली, रोचक आकर्षक, सुखमय बनाने के लिए तथा शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि जरूरी है। प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु वातावरण में परिचित होना आवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शुक्र परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण का प्रभाव नहीं है।

शोध–प्रविधि :

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए अनुसंधानकर्जी ने अध्ययन प्रक्रिया को अनुसंधान विधि से सम्पन्न किया है। प्रस्तुत शोध में जयपुर में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में लिया अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को लिया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के चुनाव हेतु यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है।

जिसमें जयपुर मण्डल में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् 300 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है। जिसका निर्माण हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों वर्जन का उद्देश्य स्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मापन करना है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्याः

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अन्तर है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अन्तर नहीं है।

सारणी–1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अन्तर को दर्शाते हुए प्रसरण मान (एफ अनुपात)

स्रोत	**स्वतन्त्रांश** (df)	**वर्ग योग** (SS)	**माध्य वर्ग योग** (ms)	**एक–अनुपात** (F-Ratio)	**सारणी मान**
समूहों के मध्य	2	810.87		5.44*	f.01(2.297)=4.71
समूहों के अन्दर	297	22226.81			
कुल	299	23037.68	405.44		

***.01 स्तर पर सार्थक**

सारणी संख्या 1 से दृष्टव्य होता है कि एफ अनुपात का मान 5.44 हैं, जो 01 सार्थकता स्तर पर ंत ′2, 297 पर सारणी मान 4.61 से अधिक है। सार्थक एफ अनुपात के आधार कह सकते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में विभिन्नता है।

सारणी सं.–1.1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के मध्यमानों के बीच अन्तर का टी–मान

क्र.सं.	स्तर	न्यादर्श	मध्यमान	σ_D	D	$t -$ मान	सार्थक / असार्थक
1	उच्च	76	49.00	1.94	1.59		असार्थक
	मध्यम	148	47.06				
2	उच्च	76	49.00	4.59	3.28		सार्थक
	मध्यम	76	44.41				
3	उच्च	148	47.06	2.65	2.18		असार्थक
	मध्यम	76	44.41				

सारणी संख्या 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए निगमित टी–मान क्रमशः 1.59, 3.28 एवं 2.18 है। समूह तुलना से यह प्रतीत होता हैं कि उच्चतर संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता से अधिक है। जबकि उच्चतर एवं मध्यवर्ती संस्थागत वातावरण तथा मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता से समानता है। अतः उच्चतर एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में विविधता है।

निष्कर्षतः उच्चतर एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में विविधता है। तथा अर्थात् संस्थागत वातावरण का विद्यार्थियों के सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है।

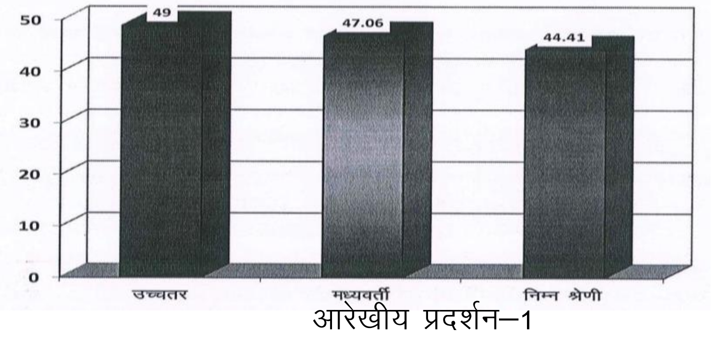

आरेखीय प्रदर्शन–1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के मध्यमान

2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की सृजनात्मकता पर संस्थागत वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

H_2 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता में अन्तर है।

$H_{0}2$ उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता में नहीं अन्तर है।

सारणी सं. – 2

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता में अन्तर को दर्शाते हुए प्रसरण मान (एफ अनुपात)

स्रोत	स्वतन्त्रांश (df)	वर्ग योग (SS)	माध्य वर्ग योग (ms)	एक–अनुपात (F-Ratio)	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	1186.96	593.48	18.69*	f.01(2.147)=4.75
समूहों के अन्दर	147	4700.78	31.76		
कुल	149	5887.74	625.25		

***.01 स्तर पर सार्थक**

सारणी संख्या 2 से दृष्टव्य होता है कि एफ अनुपात का मान 18.69 हैं, जो 01 सार्थकता स्तर पर df=2, 147 पर सारणी मान 4.75 से अधिक है। सार्थक एफ अनुपात के आधार कह सकते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता में विभिन्नता है।

सारणी–2

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता के मध्यमानों के बीच अन्तर का टी–मान

क्र.सं.	स्तर	न्यादर्श	मध्यमान	σ_D	D	$t -$ मान	सार्थक / असार्थक
1	उच्च	39	56.62	1.12	3.79	3.39	सार्थक
	मध्यम	73	52.82				
2	उच्च	39	56.62	1.28	7.85	6.11	सार्थक
	मध्यम	38	48.76				
3	उच्च	73	52.82	1.13	4.06	3.60	सार्थक
	मध्यम	38	48.76				

सारणी संख्या 2.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए निगमित टी–मान क्रमशः 3.39, 6.11 एवं 3,60 है। समूह तुलना से यह प्रतीत होता हैं कि उच्चतर संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता से अधिक है। जबकि मध्यवर्ती संस्थागत वातावरण के छात्रों की सृजनात्मकता निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता से अधिक है। अतः उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता में विविधता है अर्थात् तीनों में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्षतः उच्चतर, मध्यवर्ती एवं निम्न संस्थागत वातावरण वाले छात्रों की सृजनात्मकता में विविधता है अर्थात् संस्थागत वातावरण का छात्रों के सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. जेरे, ए. (2007). द इन्वेस्टीगेशन बिट्विन द आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट एण्ड प्रोड्क्टविटी ऑफ स्टॉफ इन पब्लिक हास्पिटल ऑफ शाहिद बेशटी यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल सांइसेस, एम.ए. थीथिस इन मैनेजमेन्ट ऑफ हेल्थ सर्विसेस, इस्लामिक आजाद यूनिवर्सिटी, तेहरान।
2. फिक बी० व होविगंटन, डेविड (1981), क्रियेटिविटी, इंटेलीजेस एंड पर्सन, कैलिफोर्निया, साताक्रूज एनुअल रिव्यू ऑफ साइकोलॉजी, ई० आर० आई० सी० बेव पोर्टल।
3. बावा, एस० (1996). ए स्टडी ऑफ क्रियेटिविटि एड ऐकेडेमिक एचीवमेंट, साइकोलिंग्या, वाल्यूम 25 (182).
4. मैकाबे, मैरिटा पी० (1991). इन्फ्लूऐंस ऑफ क्रियेटिविटी एंड इंटलीजेंस ऑन एकेडमिक परफार्मेंस, जर्नल ऑफ क्रियेटिव बिहेवियर, आर० आई० सी० वेब पोर्टल।
5. मैकलीलेन, आर. एण्ड निकोल, बी. (2008). द इम्पार्टेन्स ऑफ क्लासरूम क्लाइमेट इन फास्टरिंग स्टूडेन्ट्स क्रिएटिविटी इन डिजाइन एण्ड टेक्नोलॉजी लेशन, पेपर पर्जेन्टेड इन कॉन्फैन्स, Loughborogh University